पर्यावरणः हद हो चुकी है, संभल जाइए

डॉ. किशोर पंवार

पिछले 40 वर्षों से पूरी दुनिया में विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाता रहा है। 1972 को स्टॉकहोम सम्मेलन में विश्व में तेज़ी से बिगड़ते पर्यावरण की चिंता से यह दिन मनाना तय किया गया था। अस्सी के दशक में जल, वायु और मिट्टी का प्रदूषण ही प्रमुख समस्याएं थीं। तब ई-कचरा नहीं था। ठोस कचरा भी इतना नहीं था। ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस गैसें और जलवायु परिवर्तन जैसी विकराल समस्याएं नहीं थीं, जिन्होंने पृथ्वी के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है। ये समस्याएं आज हैं और ये सब पिछले चालीस वर्षों में विश्व पर्यावरण दिवस मनाते-मनाते ही पैदा हुई हैं। लगता हैं 'मर्ज़ बढ़ता ही गया ज्यों-यों दवा की'।

तो क्या पर्यावरण दिवस मनाना बंद कर दें या दिवस की बजाय पर्यावरण माह या वर्ष मनाने की ज़रूरत है। वर्तमान में हवा, पानी, मिट्टी, खेत, जंगल, वनस्पतियां और वन्य प्राणी सभी खतरे में है। पर्यावरण असंतुलन की यह समस्या बहुत जटिल, गंभीर एवं चुनौती पूर्ण है। छोटे-मोटे इलाज से यह ठीक नहीं होगी। एक-दो डॉक्टर इसका इलाज न कर सकेंगे। कारण है कि मर्ज़ खुद मरीज़ निर्मित है। अतः इसका सही उपचार स्व-चिकित्सा से ही संभव है। पर्यावरण सुधार एवं संरक्षण के लिए हमें अपने विचारों की, आदतों की, लालच की, स्वार्थ की और आलस की चिकित्सा करनी होगी। आइए चिकित्सा से पहले ज़रा मर्ज़ का जायजा तो लें कि यह कितना गंभीर है। कुछ टेस्ट रिपोर्ट देख लें ताकि इलाज में सुविधा होः

1. भारत में कालिख (सूट) प्रदूषण दुनिया की तुलना में 10 गुना ज़्यादा है। 42 प्रतिशत कालिख खाना बनाने, 25 प्रतिशत जीवाश्म ईंधन जलाने और 33 प्रतिशत खुले में कोई भी चीज़ जलाने से निकलती है। इसी कालिख के कण हमारे फेफड़ों में जाकर जमा होते हैं और उन्हें 'ब्लेक लंग्स' में बदल देते हैं। अर्थात हम हिन्दुस्तानी दिल के तो नहीं परन्तु फेफड़ों से ज़रूर काले हैं।

2. हमारे यहां प्रति वर्ष 350 से 400 लाख टन उड़न राख बिजली घरों में कोयला जलाने से निकलती है। जिसका सिर्फ 2-3 प्रतिशत उपयोग होता है। बाकि हवा, पानी व मिट्टी को प्रदूषित करती है। यह एक बहुत बड़ी एवं गंभीर समस्या है।

3. दुनिया में प्रति वर्ष 5 करोड़ नई कारें सड़कों पर आती हैं। ये सब वायु प्रदूषण एवं ग्लोबल वार्मिंग बढ़ाती हैं।

4. दुनिया में भूमिगत जल के अत्यधिक दोहन से मिट्टी का धंसाव बढ़ता है। अकेले चीन में 20 से ज़्यादा शहर इससे प्रभावित हैं।

5. अमेरिका में 6 करोड़ पक्षी प्रति वर्ष कीटनाशियों के कारण मर जाते हैं।

6. प्रतिदिन 5 वर्ष और इससे कम उम्र के लगभग दस लाख अमेरिकन बच्चे न्यूरोटॉक्सिक कीटनाशियों से प्रभावित होते हैं।

7. फसलों पर छिड़के जाने वाले लगभग 66 कीटनाशी में कैंसरकारी पदार्थ पाए गए हैं।

8. 35 हज़ार प्रकार के कीटनाशियों में से सिर्फ 10 प्रतिशत की ही मनुष्य पर प्रभावों की जांच हो पाई हैं। बाकी खुदा हाफिज़।

9. चीन में प्रति वर्ष करोड़ों पेड़ों को45 करोड़ डिस्पोज़ेबल चॉपस्टिक बनाने के लिए काट दिया जाता है।

10. अमेरिका में प्रति वर्ष 1.80 करोड़ बेबी नेपकिन्स (पोतड़े) कचरे के ढेर में फेंके जाते हैं। पूरी दुनिया में एक करोड़ पेड़ों को प्रति वर्ष इनके निर्माण हेतु काटा जाता है। एक पोतड़े को नष्ट होने में लगभग 500 वर्ष लगते हैं। क्या हमारा परम्परागत कपड़े का तिकोना पोतड़ा इससे अच्छा नहीं है जो बार-बार उपयोग में आता है।

11. गुजरात में डॉ. जडेजा ने एक मृत गाय के पेट से प्लास्टिक की 4000 थैलियां निकाली थीं। दिल्ली के चिड़ियाघर में एक मृत हिरण के पेट से प्लास्टिक की सैकड़ों थैलियां

निकलीं। क्या इनकी असामयिक मौत के लिए मानव निर्मित प्लास्टिक और मनुष्य की आदतों को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाना चाहिए?

12. अकेले मुम्बई में प्रतिदिन 2300 टन इमारती मलबा पैदा होता है जिसे ठिकाने लगाना बड़ा मुश्किल काम है।

13. प्रति वर्ष 1 लाख समुद्री स्तनपाई जीवों की मृत्यु प्लास्टिक का कचरा खाने से होती है।

14. दिल्ली जैसे महानगरों में वायु प्रदूषण के कारण हज़ारों लोग प्रति वर्ष दमा एवं दिल के रोगी हो जाते हैं। छोटे बच्चों और बूढ़ों पर वायु प्रदूषण का प्रभाव ज़्यादा होता है।

15. पृथ्वी का तापमान बढ़ने से ग्लेशियर सिकुड़ रहे हैं। उससे पहाड़ी नदियों के विलुप्त होने का खतरा पैदा हो रहा है।

16. जलवायु परिवर्तन के चलते कहीं सूखा और कही बाढ़ की स्थितियां बन रही हैं। पहले जहां सूखा पड़ता था वहां अब बाढ़ आने लगी है, जहां पानी की भरमार थी वहां सूखा पड़ रहा है।

ये कुछ तस्वीरें हैं हमारे पर्यावरण की। इन्हें हमने ही बनाया है। हमारे पर्यावरण का स्वास्थ लगातार बिगड़ता जा रहा है। पृथ्वी का पारा लगातार चढ़ता ही जा रहा है। क्या अब भी हम नहीं चेतेंगे। यदि अब भी हमने अपने पर्यावरण की चिंता न की तो फिर हमारी चिंता करने वाला भी कोई नहीं बचेगा। आज से ही पर्यावरण सुधार एवं सुरक्षा के वे सारे उपाए शुरू करें जिनके बारे में पर्यावरणविद हमेशा कहते रहे हैं। यदि हम सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक रूप से ठान लें कि इस पृथ्वी को बचाएंगे, सवारेंगे, सुधारेंगे, तो यह कोई मुश्किल काम नहीं है। ***(स्रोत फीचर्स)***